राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 193
मुझे मौत चाहिए
मुफ्त
ध्रुव का
एक पोस्टर
सुपर कमांडो
ध्रुव

## सुपर कमांडो ध्रुव

# मुझे मौत चाहिए

कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

संपादन : मनीष चंद्र गुप्त

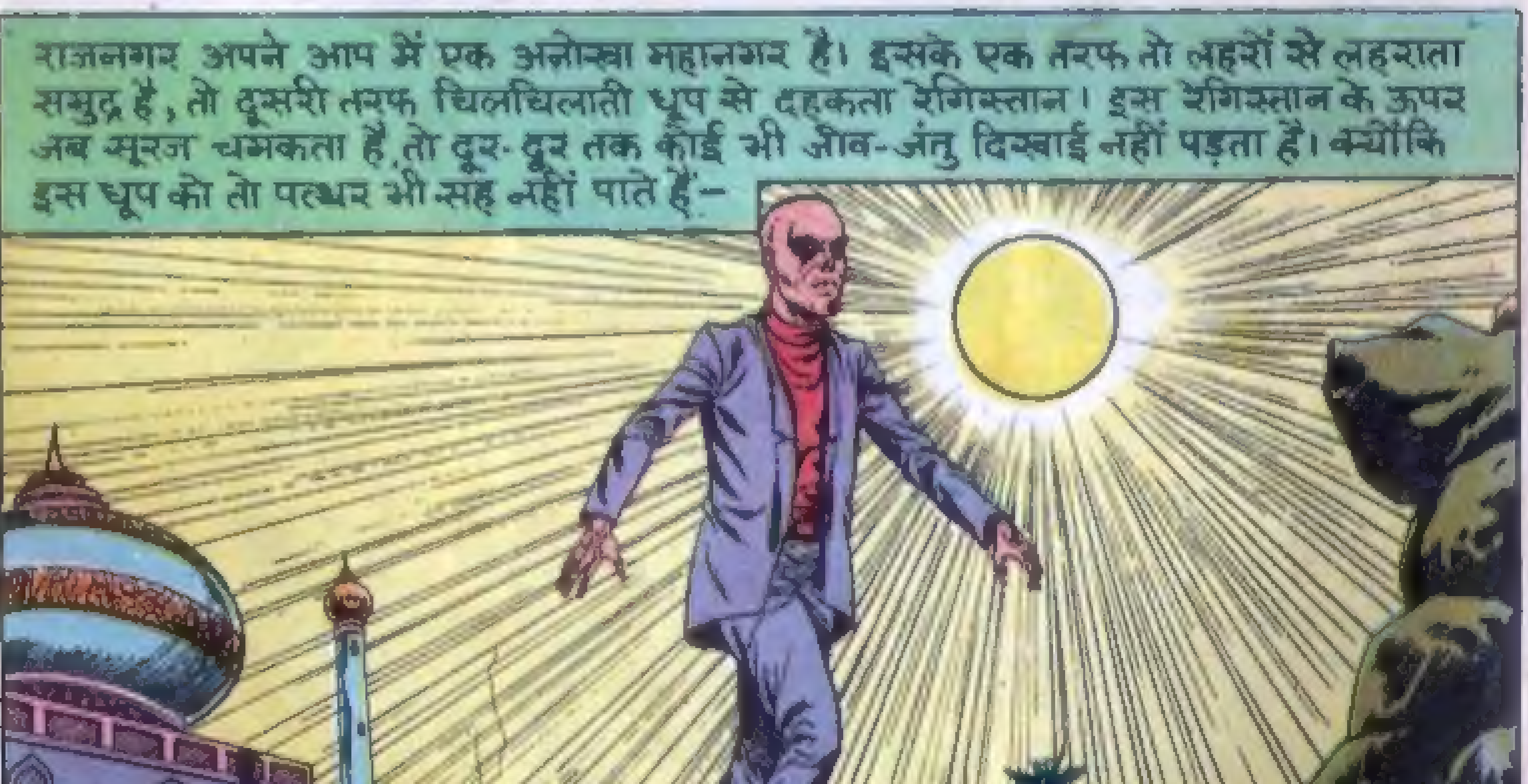

और राजनगर में - एस॰एस॰पी॰ साहब शहर में घट रही आतंकवादी घटनाओं से चिंतित थे-
हम जानते हैं, ध्रुव, कि ये वारदातें कौन कर रहा है, लेकिन हम उनको पकड़ नहीं पा रहे हैं।
ऐसा क्यों, सर?
क्योंकि ये खतरनाक हत्यारे इस शहर में कहां छिपे हुए हैं, यह हम नहीं जानते हैं।...
...और ये इतनी शीघ्रता से आतंकवादी हरकतें कर के भागते हैं, कि इनका पीछा कर पाना बहुत मुश्किल होता है।
इसका पता लगाने की जिम्मेदारी मैं लेता हूं, सर। जल्दी ही वे आतंकवादी आपकी गिरफ्त में होंगे।
और लगभग इसी वक्त शहर के एक व्यस्त बाजार से गुजरती एक तेज वैन जरा धीमी हुई -
और उसमें से एक शक्तिशाली हथगोला उछल कर सड़क पर आ गिरा।
यह तो बम है। भागो!
यह जरूर इन आतंकवादियों का ही काम है।
हे ईश्वर! अब तू ही रक्षा करना।
सभी अपनी जान बचाने के लिए बम से दूर भागे। पूरे बाजार में भगदड़ मच गई।
लेकिन भीड़ होने के कारण भागने का रास्ता भी नहीं था-
?
ऐसे में एक बूढ़ा आदमी, जिस के कपड़ों से रेत जैसे चू रही थी, बम की तरफ बढ़ा।
और उसने बम को उठा लिया-
अरे, पागल हो गए हो क्या? यह बम फटने वाला है!!
तुम्हारे चिथड़े उड़ जाएंगे।
मेरे चिथड़े उड़ जाएंगे?
काश! इसकी बात सच होती।

लेकिन मैं इस बम को ऐसे फटने नहीं दूंगा। वर्ना कई जानें चली जाएंगी। ... और मैं यह नहीं चाहता कि मेरे अलावा और कोई भी मरे।
वह बूढ़ा बम को उठाकर भीड़ से दूर दौड़ा।
और हथगोले को अपने ही शरीर के नीचे दबाकर लेट गया—
अगले ही क्षण - बम फट गया—
धड़ाआम
लेकिन शरीर के नीचे दबा होने के कारण धमाके का असर दूर तक नहीं हुआ।
यह तो बेहोश हो गया।
हां! लेकिन आश्चर्य है। इसके शरीर पर तो कहीं खरोंच तक नहीं आई है।
फिर भी, इसको अस्पताल तो पहुंचाना ही होगा। इसने अपनी जान देकर हमारी जानें बचाई हैं।
आतंकवादी भी यह दृश्य देख रहे थे—
देखा, अम्मा! हमारे कम से कम पचास हजार रुपए पानी में चले गए।
हां यार! हमको इस बम से मरने वाले हर आदमी पर पांच हजार रुपए मिलते। और कम से कम दस तो मरते ही मरते।
लेकिन इस कमीने बुड्ढे ने हमारी स्कीम चौपट कर दी। सबसे पहले इसी को ठिकाने लगाना पड़ेगा।
लेकिन भीड़ तो इसे अस्पताल ले जा रही है।
उस एंबुलेंस के पीछे चलो।

इस घटना की सूचना ध्रुव तक भी पहुंच गई थी–
EMERGENCY
और वह उस बूढ़े से मिलने अस्पताल तक आ पहुंचा था।
उसका शरीर ऊपर से तो बिल्कुल ठीक है, ध्रुव! लेकिन उसको अंदरूनी चोट कितनी आई है, यह तो उसके होश में आने पर ही पता चलेगा।
NURSING STATION
ओह! उस भीड़ में वही एक ऐसा आदमी था, जो भयभीत नहीं था।
उसने जरूर उन आतंकवादियों को देखा होगा। मेरा उससे मिलना बहुत जरूरी है।
आई एम सॉरी! वैसे भी अभी वह होश में नहीं है।
हम उसपर पूरी जाँच रखे हुए हैं, ध्रुव! उसके होश में आ जाने के बाद ही कुछ कहा जा सकता है, कि वह बचेगा या नहीं। वैसे मुझे उम्मीद कम है।
सुना, हीरा? अभी हम इसके अपने आप मरने का इंतजार करते हैं। कम से कम पांच हजार तो मिलेंगे न?
एक आश्चर्य की बात और है, ध्रुव! बम के धमाके से उस बूढ़े की खाल इतनी सख्त हो गई है कि जब हम उसे इंजेक्शन लगाने लगे, तो सुई ही टूट गई।
लेकिन ऐसा कैसे हुआ, यह तो शायद कोई वैज्ञानिक भी नहीं बता पाएगा।
लेकिन ऊपर-इमर्जेंसी वार्ड में भरती उस बूढ़े को धीरे-धीरे होश आ रहा था –

और जैसे ही सुबह की सफेदी आसमान पर छानी शुरू हुई—
वह बिस्तर से उठकर बैठ गया।
उसके कपड़े सामने ही टंगे थे। उसने कोट के अस्तर के अंदर से कुछ निकाला—
फिर वह चुपचाप बाहर निकला। चारों तरफ सन्नाटा था। वह सधे हुए कदमों से रिसेप्शन पर पहुंचा—
उसने सोती हुई रिसेप्शनिस्ट के खुले हाथ में कुछ रखा।
और बाहर के दरवाजे की ओर बढ़ गया—
य... यह क्या? यह तो वही बुड्ढा है!!
अरे, हीरा! उठ!
क्या आफत आ गई, बे?
उधर देख। कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूं?
नहीं! यह तो वही बुड्ढा है, जग्गा! लेकिन यह रातोंरात ठीक कैसे हो गया?
यानि हमारे पांच हजार भी गए?
अरे नहीं! इस को उतनी चोट नहीं लगी होगी, जितनी हम समझ रहे थे।...
...पर इसको अपने मामले में टांग अड़ाने के लिए सबक तो सिखाना ही पड़ेगा। आओ!

और इसके कुछ मिनटों के बाद ही ध्रुव भी अस्पताल आ पहुंचा-
डॉक्टर साहब उस बूढ़े मरीज़ के क्या हाल हैं?
आओ, देखते हैं।
अभी थोड़ी देर पहले तक तो वह बेहोश ही था।
अरे, यह रिसेप्शनिस्ट तो सो रही है। ... और इस के हाथ में यह सोने का सिक्का और चिट कैसी रखी है?
इस पर तो लिखा है, रूम नं० 107 का पेशेंट।
यह तो उसी बूढ़े के कमरे का नंबर है।
आखिर यह चक्कर क्या...
डॉक्टर, 107 का पेशेंट अपने कमरे में नहीं है।
असंभव! वह मरीज चलना तो दूर, हिलने की हालत में भी नहीं है।
एक असंभव चीज और देखिए। यह खरे सोने का सिक्का लगभग तीन सौ साल पुराना है।
और वह मरीज़ ऐसे दुर्लभ सिक्के से अपना बिल अदा कर रहा है?
लगता है कि कोई उस का अपहरण करके ले गया है।
अगर ऐसा है, तो वे लोग अभी ज्यादा दूर नहीं गए होंगे।
मैं अभी उनको पकड़ता हूं।

उधर दोनों आतंकवादी अपने शिकार को घेर चुके थे–
क्या चाहते हो तुम लोग...? ओह! तुम दोनों तो वही हो जिन्होंने भीड़ पर बम फेंका था।
बड़ी तेज नजर है बुड्ढे की, जग्गा!
लगता है कि तुम दोनों मुझे मारना चाहते हो। है न ?
दिमाग भी तेज है बुड्ढे का, जग्गा!
तो कोशिश करो, मुझे मारने की।
हीरा का चेहरा एकदम से कठोर हो गया–
मारना तो पड़ेगा ही, बुड्ढे!
खच
विदेशी सरकार हमें फ्री के पैसे नहीं देती है।
और इस बार जग्गा के चेहरे पर आश्चर्य तथा भय के भाव उभर आए –
क्योंकि चाकू का स्टील का मजबूत फल बुरी तरह से मुड़ गया था।
और ठीक इसी वक्त– ध्रुव भी वहां पर पहुंच गया–
यह तो वही वृद्ध लगता है।
और उसके साथ दो आदमी भी खड़े हैं।
लेकिन ये दोनों उसपर हमला क्यों कर रहे हैं?
इसका मतलब है कि ये जरूर वे ही आतंकवादी हैं।... और ये उस बूढ़े को जान से मारना चाहते हैं।
जग्गा, ध्रुव!!

पलक झपकते एक आतंकवादी ने अपना शाल उतार फेंका–
घबरा मत, हीरा! आज इसकी मौत इस को यहां पर खींच लाई है।
और उसकी उंगली शॉल के अंदर छिपी स्टेनगन के ट्रिगर पर दब गई।
ऑटोमेटिक स्टेनगन से गोलियों की बौछार ध्रुव की तरफ लपकी–
तडतडतडतड़तड़
लेकिन वे गोलियां ध्रुव तक नहीं पहुंच पाईं।
आतंकवादियों को दूसरा मौका नहीं मिला–
धाड़
किस्मत ने आज ध्रुव को यह सुनहरा मौका दिया था–
धड़ाक
और आतंकवादियों को भागने का अवसर देकर वह यह मौका गंवाना नहीं चाहता था।
लेकिन इस पूरे समय में किसी का भी ध्यान उस बूढ़े की तरफ नहीं था। अब तक वह ये सारा माजरा खामोशी से देख रहा था–
लेकिन फिर- न जाने क्यों, उसने जमीन पर पड़ी स्टेनगन को उठाकर ध्रुव की तरफ तान दिया–

इस बार चूंकि ध्रुव का ध्यान दूसरी तरफ था, इसीलिए वह गोलियों से बच नहीं पाया–
आााह!
एक गोली ध्रुव की बांह से रगड़ खाती हुई निकली, और वह चीख कर नीचे गिर पड़ा।
आओ, भागो!
आतंकवादी खुद आश्चर्यचकित थे–
आज उनके शिकार ने ही उनको बचाया था।
लेकिन सवाल-जवाब का वक्त नहीं था–
वे वैन में बैठ कर भागे–
अब मैं इनको भागने से नहीं रोक सकता।
लेकिन इस बूढ़े ने मुझपर हमला क्यों किया? मैं तो इसी को बचा रहा था। ... और यह चाकू टेढ़ा कैसे हो गया?
और फिर अस्पताल में–
तुम्हारे सवालों का तो ओर-छोर ही समझ में नहीं आ रहा है, ध्रुव!
ऐसा आदमी कौन हो सकता है जिसपर बम का भी असर न हो? और जिसके शरीर से लगकर चाकू भी टेढ़ा हो जाए।
मुझे तो लगता है कि उस बूढ़े का आतंकवादियों से सीधा संबंध है। यह सारा घटनाक्रम उनकी आपसी लड़ाई का नतीजा था।
ध्रुव शांत रहा। वह कुछ सोच रहा था।
डॉक्टर साहब, उस बूढ़े के वे कपड़े कहां हैं, जिन को उसने अस्पताल में लाए जाते समय पहन रखा था।
यहीं पर हैं। क्या तुम समझते हो कि वह इन चिथड़ों को लेने आएगा?

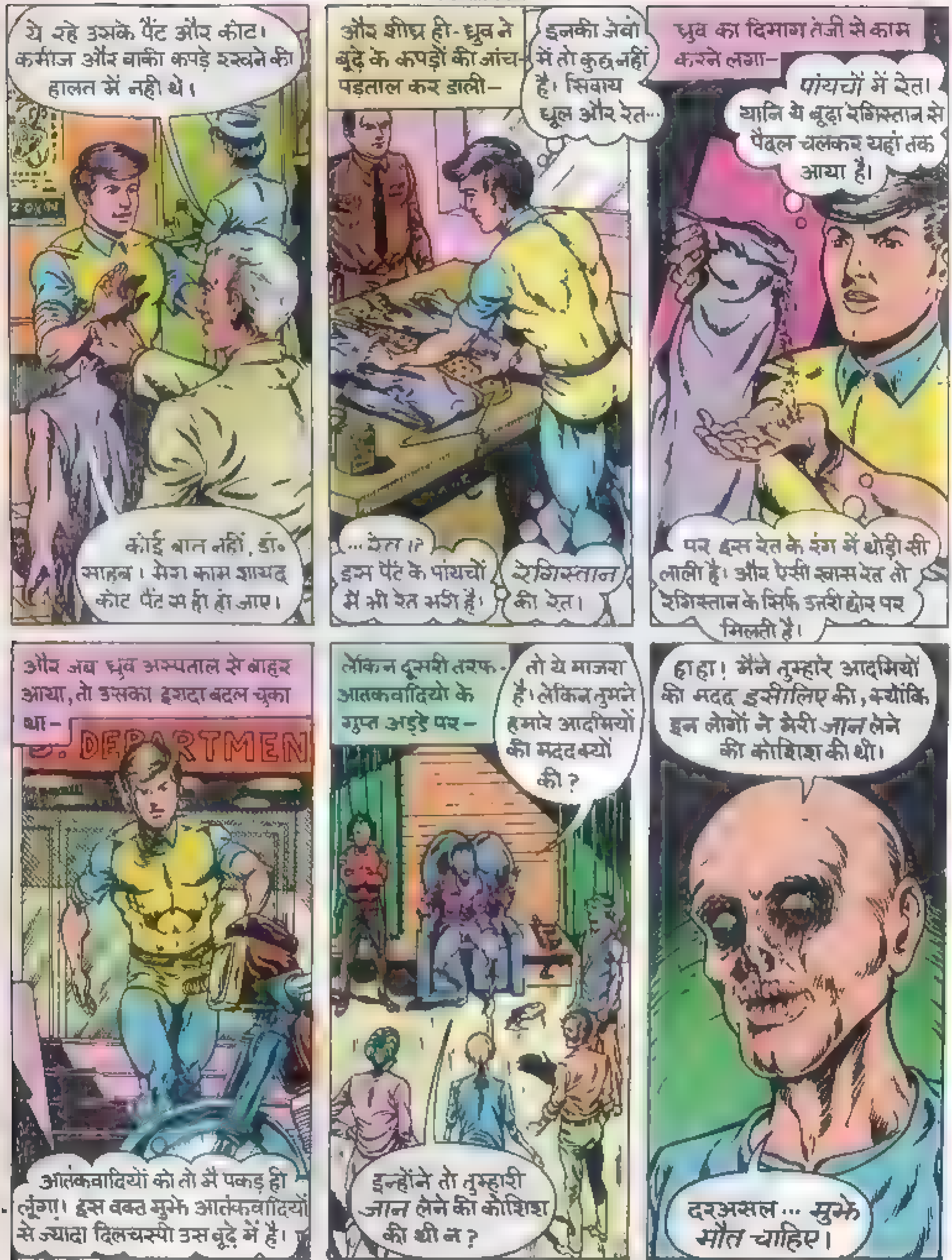
ये रहे उसके पैंट और कोट। कमीज और बाकी कपड़े रखने की हालत में नहीं थे।
कोई बात नहीं, डॉ० साहब। मेरा काम शायद कोट पैंट से ही हो जाए।
और शीघ्र ही - ध्रुव ने बूढ़े के कपड़ों की जांच-पड़ताल कर डाली -
इनकी जेबों में तो कुछ नहीं है। सिवाय धूल और रेत...
...रेत !? इस पैंट के पांयचों में भी रेत भरी है।
रेगिस्तान की रेत।
ध्रुव का दिमाग तेजी से काम करने लगा -
पांयचों में रेत। यानि ये बूढ़ा रेगिस्तान से पैदल चलकर यहां तक आया है।
पर इस रेत के रंग में थोड़ी सी लाली है। और ऐसी खास रेत तो रेगिस्तान के सिर्फ उत्तरी छोर पर मिलती है।
और जब ध्रुव अस्पताल से बाहर आया, तो उसका इरादा बदल चुका था -
DEPARTMEN
आतंकवादियों को तो मैं पकड़ ही लूंगा। इस वक्त मुझे आतंकवादियों से ज्यादा दिलचस्पी उस बूढ़े में है।
लेकिन दूसरी तरफ - आतंकवादियों के गुप्त अड्डे पर -
तो ये माजरा है। लेकिन तुमने हमारे आदमियों की मदद क्यों की ?
इन्होंने तो तुम्हारी जान लेने की कोशिश की थी न ?
हा हा ! मैंने तुम्हारे आदमियों की मदद इसीलिए की, क्योंकि इन लोगों ने मेरी जान लेने की कोशिश की थी।
दरअसल ... मुझे मौत चाहिए।

मौत चाहिए? तो इस में मुश्किल क्या है? जाकर रेल की पटरी पर लेट जाओ। पहाड़ से छलांग लगा दो। कनपटी पर गोली मार लो।
ये सब मैं कर चुका हूं।
ये सब तुम कर चुके हो?
...और फिर भी जिंदा हो? सठिया गए हो क्या, बुढ़ऊ?
अगर मैं सच बोलूंगा, तो तुम सठिया जाओगे।
और चाकू तो तुमने ही मुझे मारा था।
वही चाकू, जिसका फल टेढ़ा हो गया था।
ह...हां! लेकिन वह कैसे...?
यह सोचकर तुम अपने दिमाग को कष्ट मत दो।
तब तो हम इसका इस्तेमाल अपने रास्ते का सबसे बड़ा कांटा हटाने के लिए करेंगे।
अ... हमको आप पर यकीन है, बुजुर्गवार! लेकिन हमारे पास ऐसा कोई तरीका नहीं है, जिससे हम आपकी इच्छा पूरी कर सकें।
आपकी मृत्यु का रास्ता केवल एक ही व्यक्ति निकाल सकता है। और वह व्यक्ति है, सुपर कमांडो ध्रुव!
यह कौन है?
वही लड़का, जिसपर आपने स्टेनगन से गोलियां चलाई थीं। लेकिन इसके लिए आपको इसे जान से मारने की पूरी कोशिश करनी पड़ेगी।
क्योंकि वह भी आपको खत्म करने के लिए कोई कसर न उठा रखेगा।
वह इस वक्त कहां है, इसका पता मेरे आदमी आपको बता देंगे।

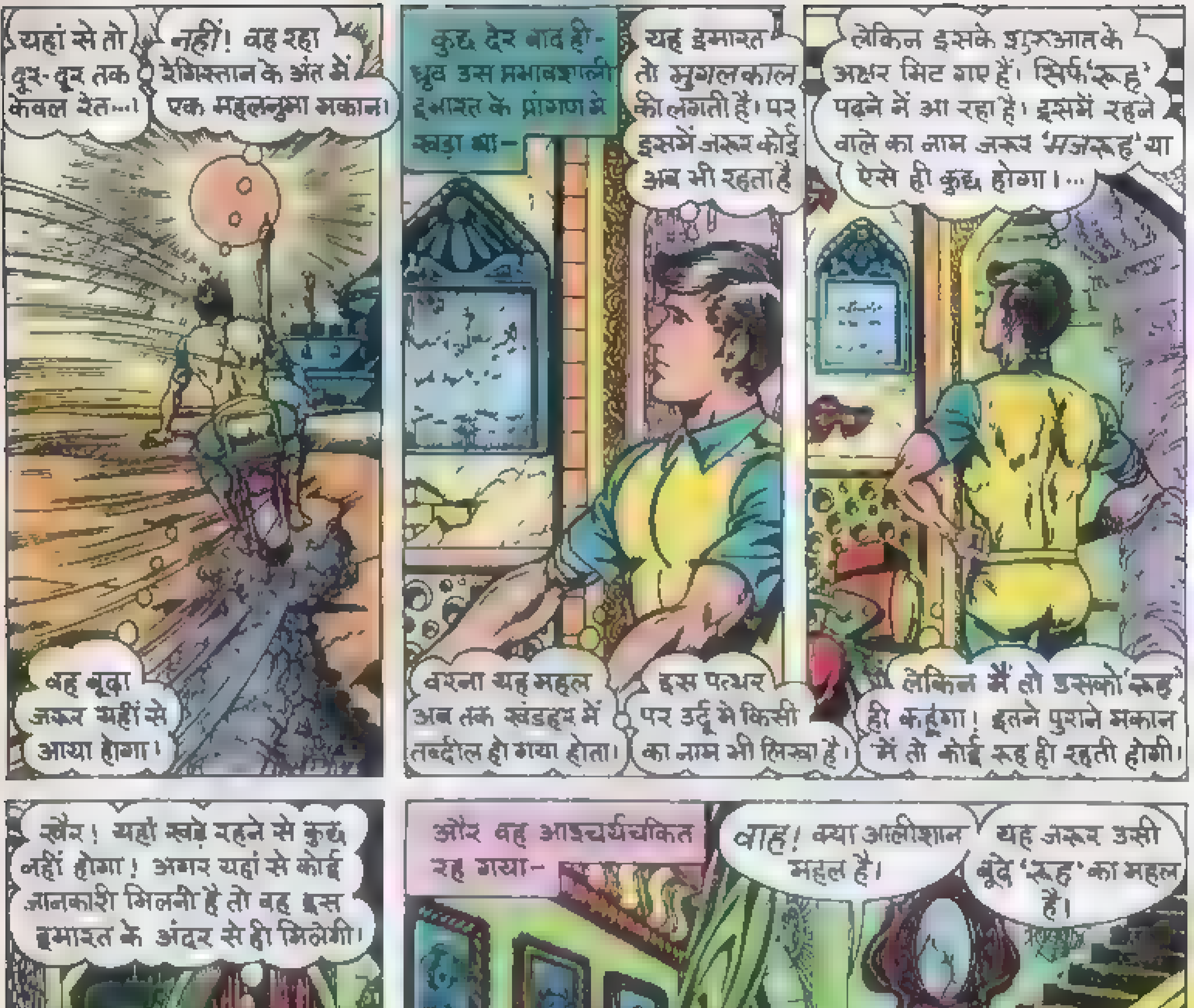
यहां से तो दूर-दूर तक केवल रेत...।
नहीं! वह रहा रेगिस्तान के अंत में एक महलनुमा मकान।
वह बूढ़ा जरूर यहीं से आया होगा।
कुछ देर बाद ही- ध्रुव उस प्रभावशाली इमारत के प्रांगण में खड़ा था-
यह इमारत तो मुगलकाल की लगती है। पर इसमें जरूर कोई अब भी रहता है
वरना यह महल अब तक खंडहर में तब्दील हो गया होता।
इस पत्थर पर उर्दू में किसी का नाम भी लिखा है।
लेकिन इसके शुरुआत के अक्षर मिट गए हैं। सिर्फ 'रूह' पढ़ने में आ रहा है। इसमें रहने वाले का नाम जरूर 'मजरूह' या ऐसे ही कुछ होगा।...
लेकिन मैं तो उसको 'रूह' ही कहूंगा। इतने पुराने मकान में तो कोई रूह ही रहती होगी।
खैर! यहां खड़े रहने से कुछ नहीं होगा! अगर यहां से कोई जानकारी मिलनी है तो वह इस इमारत के अंदर से ही मिलेगी।
ध्रुव ने इमारत के अंदर कदम रखा।
और वह आश्चर्यचकित रह गया-
वाह! क्या आलीशान महल है।
यह जरूर उसी बूढ़े 'रूह' का महल है।
दीवारों पर टंगी उसके पूर्वजों की तस्वीरों की शक्लें भी बूढ़े से काफी कुछ मिल रही हैं। यानि मैं सही स्थान पर पहुंच गया हूं।

ओह!
तभी - अंदर से उड़ता हुआ एक विशालकाय चमगादड़ ध्रुव से आ टकराया।
यह चमगादड़ था या चील।
अरे वाह! यह चित्र तो उस बूढ़े के मुगल-काल के किसी पूर्वज का लगता है।
इसकी शक्ल भी बिल्कुल रूह जैसी है। यहां तक कि इसकी ठोढ़ी पर भी वैसा ही तिल है जैसा रूह की ठोढ़ी पर है।
और तभी - ध्रुव के दिमाग में एक आश्चर्यजनक विचार कौंधा
... यानि ये सब एक ही आदमी की तस्वीरें हैं। तीन आदमियों की शक्लें तो एक जैसी हो सकती हैं, लेकिन तीनों के एक ही जगह पर तिल नहीं हो सकता। आखिर यह चक्कर क्या है?
यह वो चक्कर है, ध्रुव...
जिसमें मैं पिछले तीन सौ सालों से घूम रहा हूं।
तुम!
हां। तुम सही समझे। ये सारी तस्वीरें मेरे पूर्वजों की नहीं, मेरी ही हैं।
ओह! तो मैं धोखा खा गया।
मुझे ये तस्वीरें देखने में ढाई-तीन सौ साल पुरानी लगीं।
ठीक लगीं। यह पहली तस्वीर मैंने तब बनवाई थी, जब मैं औरंगजेब की बड़ी अदालत का काजी था। यानि मुख्य न्यायाधीश।
ओ... औरंगजेब! लेकिन वह तो कई सौ साल पहले...
कई सौ नहीं, सिर्फ तीन सौ साल पहले।

इतने ज़माने बीत गए हैं, कि अब तो मुझको अपना नाम भी याद नहीं है। वैसे मुझको तुम्हारे द्वारा दिया गया नाम 'रूह' पसन्द आया।–
...लेकिन मुझको इतना याद है कि वह ज़माना-फकीरों, सूफी और संतों का ज़माना था।
ये लोग उस वक्त तादाद में इतने ज़्यादा बढ़ गए थे, कि असली और भिखारी में फर्क करना भी मुश्किल था। और फिर, मैं भी अपने काज़ी होने के नशे में चूर रहता था—
एक रात, बादशाह सलामत के महल से दावत खाकर लौटते-लौटते रात का दूसरा पहर भी बीत गया था। मैं थका हुआ भी था। बिस्तर पर लेटते ही मुझे नींद आ गई—
लेकिन थोड़ी ही देर में सुबह हो गई, और एक फकीर मेरी खिड़की के नीचे से गाता हुआ गुज़रा—
मेरी नींद टूट गई। गुस्से के मारे मेरे दिमाग ने काम करना बंद कर दिया। मैं चिल्लाया—
सिपाहियो, इस नामुराद को पकड़ कर मेरे सामने लाओ।
जो हुक्म, काज़ी सरकार!
थोड़ी ही देर में मेरे सिपाही उस फकीर को पकड़कर मेरे सामने ले आए—
क्यों रे, भिखारी, इतनी ज़ोर से क्यों गा रहा था? पता है, तेरे गाने से हमारी नींद टूट गई।
तो इसमें क्रोध कैसा, बंदे?
सुबह का वक्त तो जागने का ही होता है।

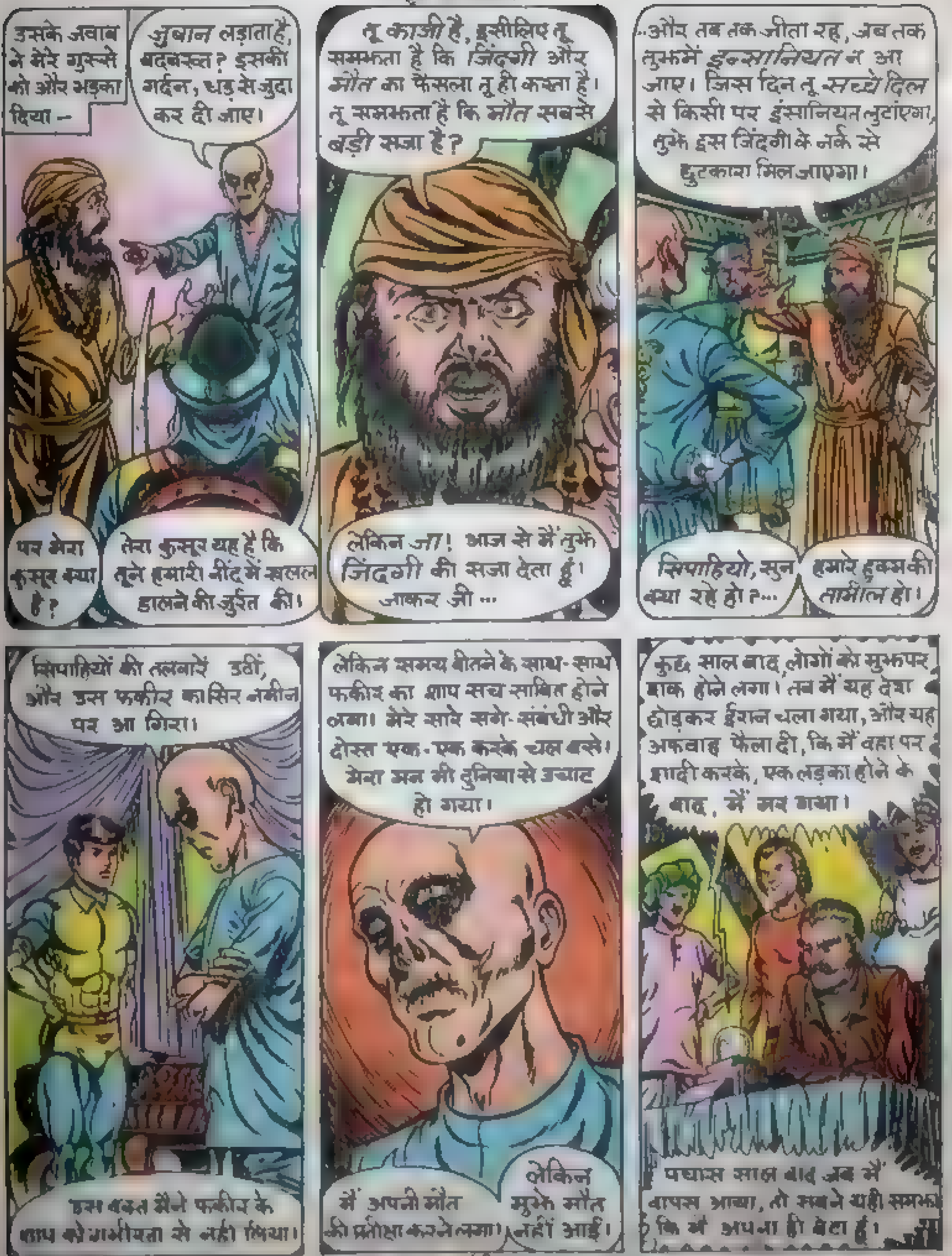
उसके जवाब ने मेरे गुस्से को और भड़का दिया –
जुबान लड़ाता है, बदबख्त? इसकी गर्दन, धड़ से जुदा कर दी जाए।
पर मेरा कुसूर क्या है?
तेरा कुसूर यह है कि तूने हमारी नींद में खलल डालने की जुर्रत की।
तू काजी है, इसीलिए तू समझता है कि जिंदगी और मौत का फैसला तू ही करता है। तू समझता है कि मौत सबसे बड़ी सजा है?
लेकिन जा! आज से मैं तुझे जिंदगी की सजा देता हूं। जाकर जी ...
...और तब तक जीता रह, जब तक तुझमें इन्सानियत न आ जाए। जिस दिन तू सच्चे दिल से किसी पर इंसानियत लुटाएगा, तुझे इस जिंदगी के नर्क से छुटकारा मिल जाएगा।
सिपाहियो, सुन क्या रहे हो?...
हमारे हुक्म की तामील हो।
सिपाहियों की तलवारें उठीं, और उस फकीर का सिर जमीन पर आ गिरा।
उस वक्त मैंने फकीर के शाप को गंभीरता से नहीं लिया।
लेकिन समय बीतने के साथ-साथ फकीर का शाप सच साबित होने लगा। मेरे सारे सगे-संबंधी और दोस्त एक-एक करके चल बसे। मेरा मन भी दुनिया से उचाट हो गया।
मैं अपनी मौत की प्रतीक्षा करने लगा।
लेकिन मुझे मौत नहीं आई।
कुछ साल बाद, लोगों को मुझपर शक होने लगा। तब मैं यह देश छोड़कर ईरान चला गया, और यह अफवाह फैला दी, कि मैं वहां पर शादी करके, एक लड़का होने के बाद, मैं मर गया।
पचास साल बाद जब मैं वापस आया, तो सबने यही समझा कि मैं अपना ही बेटा हूं।

ऐसा मैं हर पचास साल बाद करने लगा। धीरे-धीरे यहां की आबादी उजड़ गई। हरियाली खत्म हो गई, और यहां पर रेगिस्तान बन गया।
और जिस बात से मैं भी आश्चर्यचकित हूं, वह यह है कि वक्त बीतने के साथ-साथ मेरी शक्ति कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है।
...आप बम के धमाके से बेहोश कैसे हो गए थे?
इस प्रश्न का उत्तर तो मुझे खुद नहीं पता। ऐसा मुझको पहले कभी नहीं हुआ।
इस दौरान मैंने मरने की हर संभव कोशिश की। लेकिन पोटेशियम सायनाइड जैसा जहर भी मुझपर बेअसर रहा। अब तो मेरी खाल भी इतनी सख्त हो गई है कि गोलियां तक मुझपर बेअसर हैं।
श्रीमान ...अ...रूह, मैं यह नहीं कह रहा कि आप सच नहीं कह रहे हैं, लेकिन फिर भी, आपकी बात पर यकीन करना मुश्किल है।...और अगर यह सब सच है तो ...
तो अब आप क्या चाहते हैं?
मैं मौत चाहता हूं। और मैं यह चाहता हूं कि तुम मुझे किसी तरीके से मार डालो।
परंतु मैंने तो आज तक किसी को भी जान से नहीं मारा है।
लेकिन तुमको मुझे मारना होगा। वरना मैं तुम को मार डालूंगा।
बूढ़ा सधे हुए कदमों से ध्रुव की तरफ बढ़ा-
और अगले ही पल यह स्पष्ट हो गया कि बूढ़ा मजाक नहीं कर रहा था-
आह!
दूसरी तरफ- आतंकवादियों के अड्डे पर-
शाबास, हीरा! तुम ने जो ट्रांसमीटर बूढ़े पर चिपकाया था, वह बहुत सही काम कर रहा है।
आह!
अब यह गप्पी बूढ़ा हमारा रास्ता जरूर साफ कर देगा।

आह! ये इसके हाथ हैं, या ठोस लोहे के हथौड़े।
लगता है कि यह वास्तव में मेरी जान लेने पर उतारू है।
इसमें सचमुच आश्चर्यजनक ताकत है। मैं ताकत में इससे नहीं जीत सकता।
बचने का सिर्फ यही एक रास्ता है...
...कि मैं इसकी ताकत का इस्तेमाल इसी के खिलाफ करूं।...
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव दरवाजे से बाहर निकल पाता–
एक भारी मेज ने उसका रास्ता रोक लिया।
अब ध्रुव के पास लड़ने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था–
बूढ़ा फिर तेजी से ध्रुव की तरफ बढ़ रहा था।
पहला वार ध्रुव ने ही किया–
ओह! इसके पत्थर जैसे शरीर पर तो मेरा हाथ ही टूट गया।
लेकिन बूढ़े पर कुछ असर नहीं हुआ।

उसका अगला वार ध्रुव की गोली लगी बांह पर पड़ा, और ध्रुव कराह उठा। पट्टी खून से तर हो गई–
आऊ!
जल्दी मुझे खत्म करने का रास्ता सोचो, ध्रुव! वर्ना मैं तुमको खत्म कर दूंगा।
बूढ़े ने ध्रुव की कमज़ोरी को भांप लिया था। उसका अगला घूंसा भी ध्रुव के घाव पर पड़ा–
आह!
और इस बार पट्टी के साथ-साथ ध्रुव की बांह भी खून के रंग से लाल होने लगी–
ज्यादा खून निकल जाने से ध्रुव पर बेहोशी छाने लगी।
और वह लहरा कर फर्श पर आ गिरा–
यह क्या? यह तो बेहोश हो गया। मैं इस वक्त इस को कितने आराम से मार सकता हूं।
लेकिन नहीं। उन डाकुओं ने कहा था कि सिर्फ यही लड़का मेरे मरने का रास्ता ढूंढ सकता है।
इसीलिए अब मैं इसको मारने के बजाय वह काम करूंगा, जिससे यह मुझको खत्म करने का रास्ता सोचने के लिए मजबूर हो जाए।
बूढ़ा पलटा, और तेजी से बाहर निकल गया।
थोड़ी ही देर बाद वह बूढ़ा शहर की तरफ बढ़ रहा था। क्योंकि इस बार उसका निशाना ध्रुव नहीं, ध्रुव का शहर था–

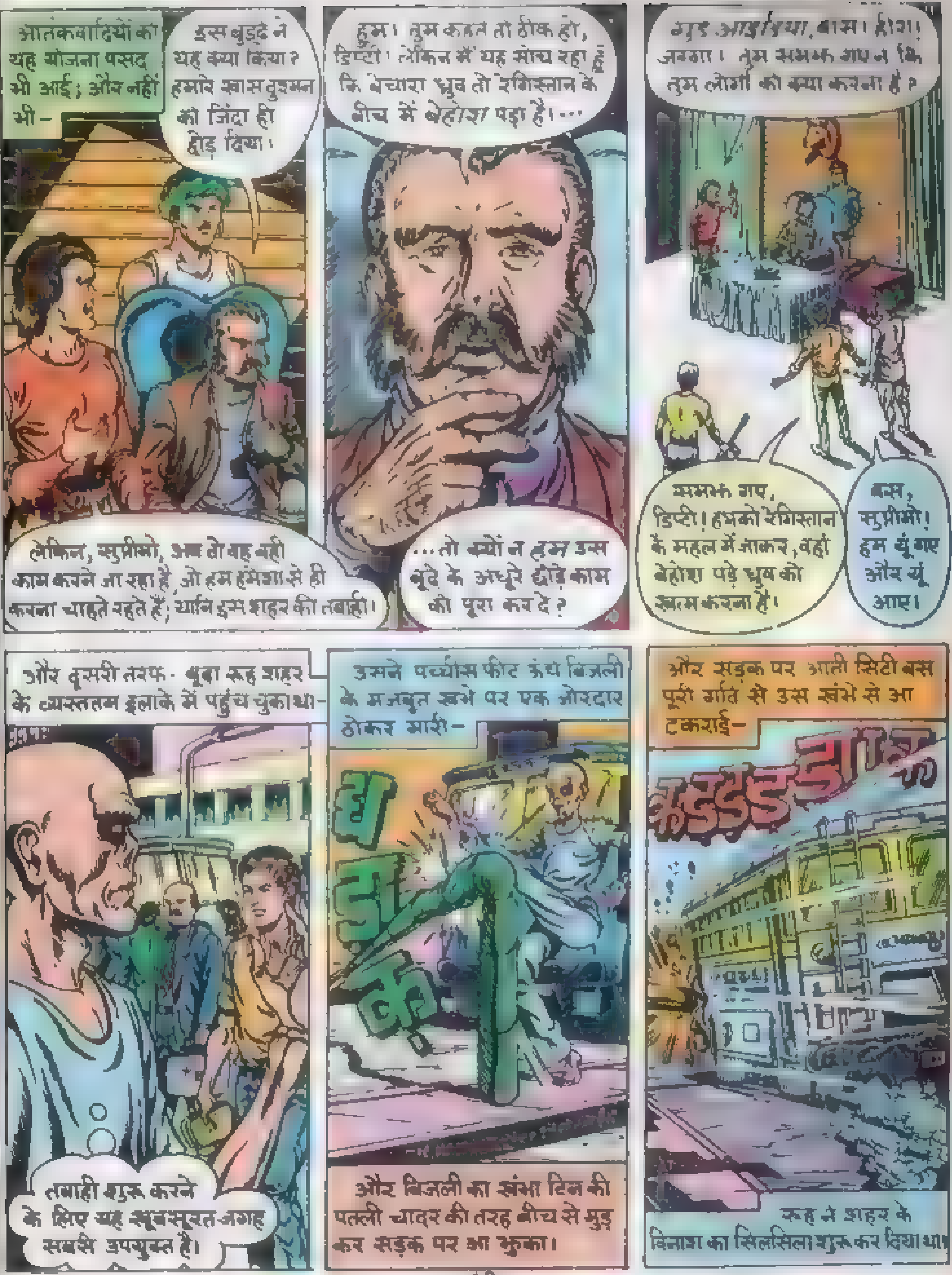
आतंकवादियों को यह योजना पसंद भी आई; और नहीं भी–
इस बुड्ढे ने यह क्या किया? हमारे खास दुश्मन को जिंदा ही छोड़ दिया।
लेकिन, सुप्रीमो, अब तो वह वही काम करने आ रहा है, जो हम हमेशा से ही करना चाहते रहते हैं; यानि इस शहर की तबाही।
हूम। तुम कहते तो ठीक हो, डिप्टी। लेकिन मैं यह सोच रहा हूं कि बेचारा ध्रुव तो रेगिस्तान के बीच में बेहोश पड़ा है।...
...तो क्यों न हम उस बूढ़े के अधूरे छोड़े काम को पूरा कर दें?
गुड आइडिया, बास! होगा! जरूर! तुम समझ गए न कि तुम लोगों को क्या करना है?
समझ गए, डिप्टी! हमको रेगिस्तान के महल में जाकर, वहां बेहोश पड़े ध्रुव को खत्म करना है।
बस, सुप्रीमो! हम यूं गए और यूं आए।
और दूसरी तरफ– बूढ़ा रूह शहर के व्यस्ततम इलाके में पहुंच चुका था–
तबाही शुरू करने के लिए यह खूबसूरत जगह सबसे उपयुक्त है।
उसने पच्चीस फीट ऊंचे बिजली के मजबूत खंभे पर एक जोरदार ठोकर मारी–
धड़ाक
और बिजली का खंभा टिन की पतली चादर की तरह बीच से मुड़ कर सड़क पर आ झुका।
और सड़क पर आती सिटी बस पूरी गति से उस खंभे से आ टकराई–
कड़डडडाक
रूह ने शहर के विनाश का सिलसिला शुरू कर दिया था।

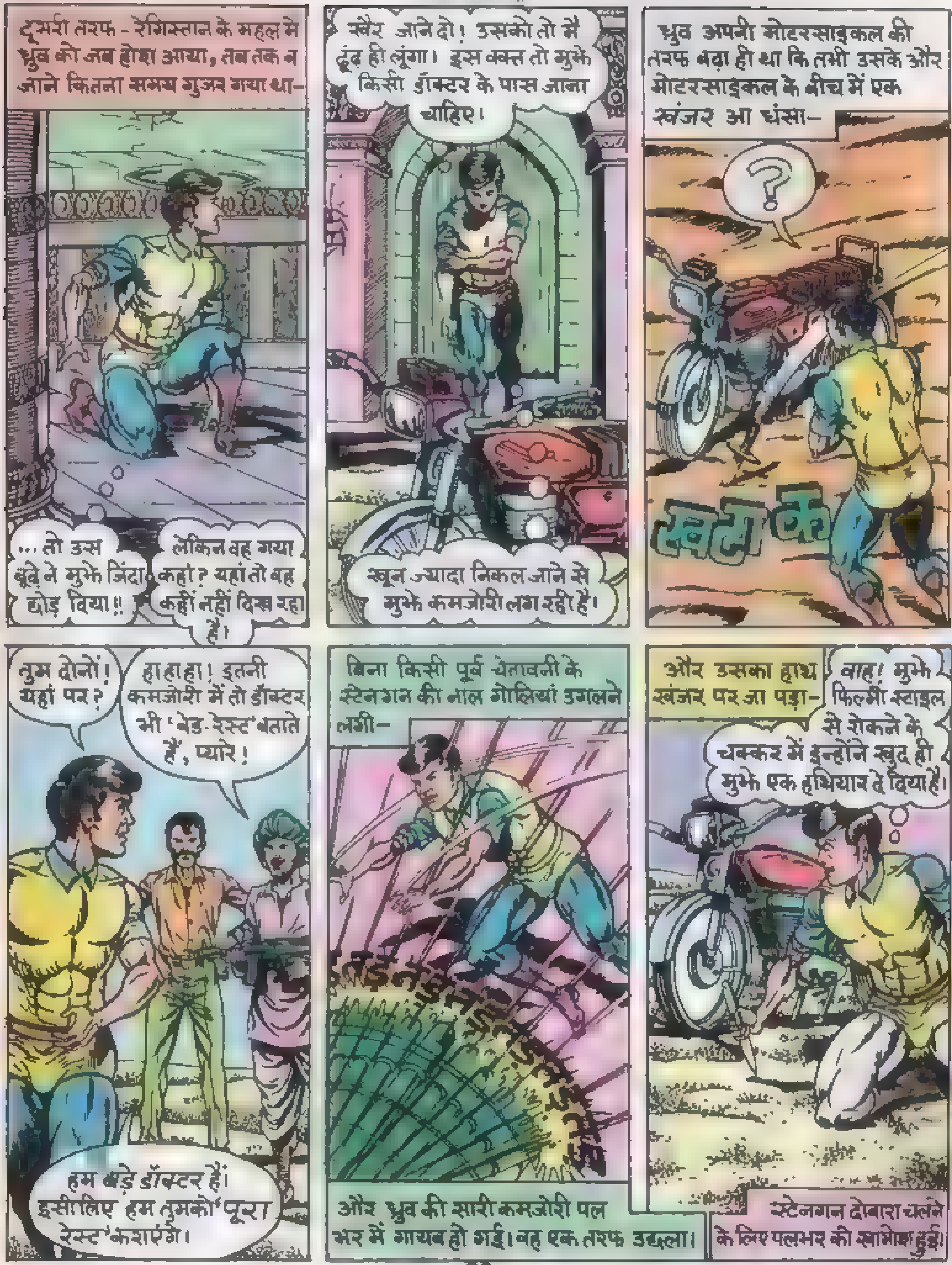

दूसरी तरफ - रेगिस्तान के महल में ध्रुव को जब होश आया, तब तक न जाने कितना समय गुजर गया था-
... तो उस बूढ़े ने मुझे जिंदा छोड़ दिया!!
लेकिन वह गया कहां? यहां तो वह कहीं नहीं दिख रहा है।
खैर जाने दो! उसको तो मैं ढूंढ ही लूंगा। इस वक्त तो मुझे किसी डॉक्टर के पास जाना चाहिए।
खून ज्यादा निकल जाने से मुझे कमजोरी लग रही है।
ध्रुव अपनी मोटरसाइकल की तरफ बढ़ा ही था कि तभी उसके और मोटरसाइकल के बीच में एक खंजर आ धंसा-
?
खटाक
तुम दोनों! यहां पर?
हा हा हा! इतनी कमजोरी में तो डॉक्टर भी 'बेड-रेस्ट' बताते हैं, प्यारे!
हम बड़े डॉक्टर हैं। इसीलिए हम तुमको 'पूरा रेस्ट' कराएंगे।
बिना किसी पूर्व चेतावनी के स्टेनगन की नाल गोलियां उगलने लगी-
और ध्रुव की सारी कमजोरी पल भर में गायब हो गई। वह एक तरफ उछला।
और उसका हाथ खंजर पर जा पड़ा-
वाह! मुझे फिल्मी स्टाइल से रोकने के चक्कर में इन्होंने खुद ही मुझे एक हथियार दे दिया है।
स्टेनगन दोबारा चलने के लिए पलभर को खामोश हुई।

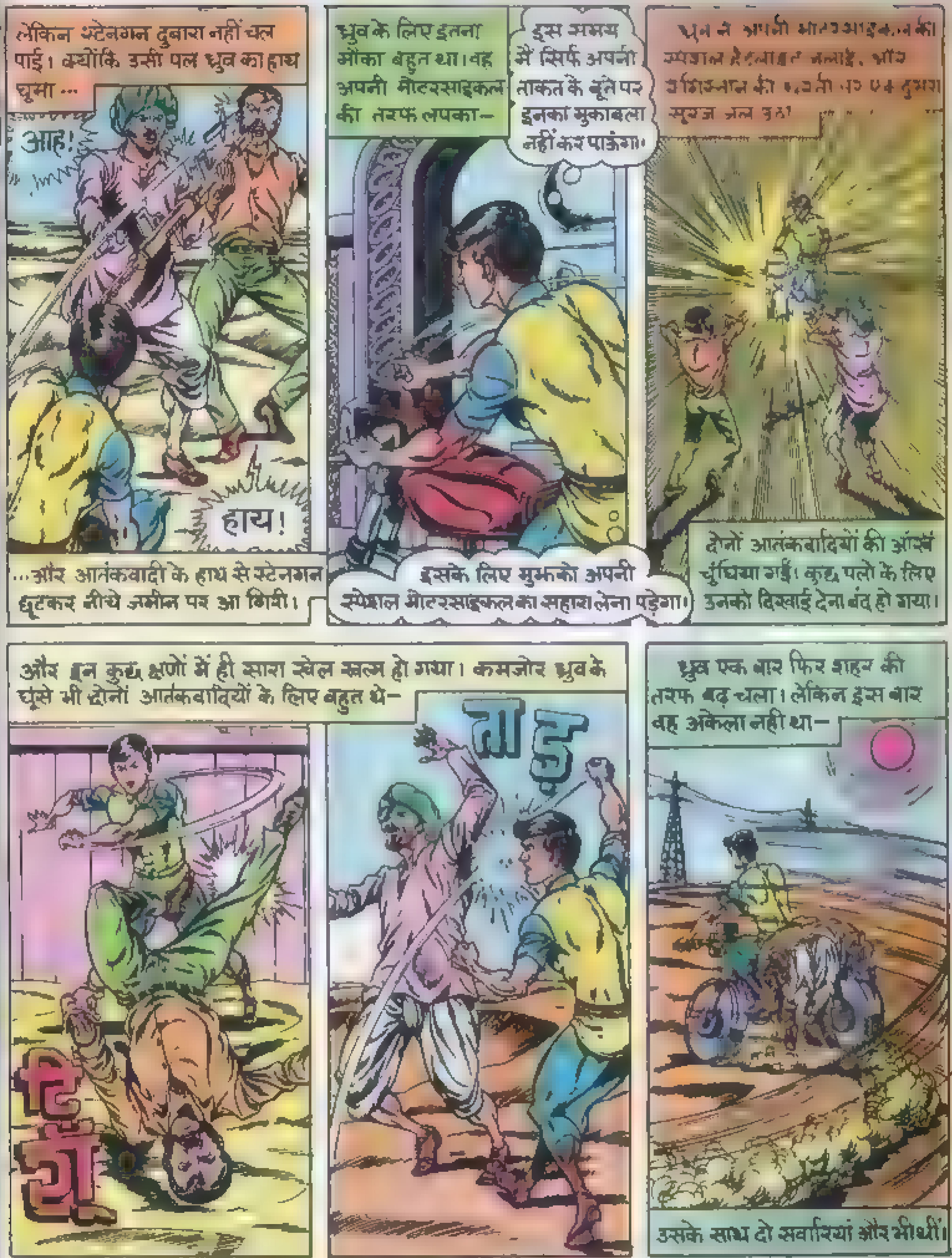
लेकिन स्टेनगन दुबारा नहीं चल पाई। क्योंकि उसी पल ध्रुव का हाथ घूमा ...
आह!
हाय!
...और आतंकवादी के हाथ से स्टेनगन छूटकर नीचे ज़मीन पर आ गिरी।
ध्रुव के लिए इतना मौका बहुत था। वह अपनी मोटरसाइकल की तरफ लपका—
इस समय मैं सिर्फ अपनी ताकत के बूते पर इनका मुकाबला नहीं कर पाऊंगा।
इसके लिए मुझको अपनी स्पेशल मोटरसाइकल का सहारा लेना पड़ेगा।
ध्रुव ने अपनी मोटरसाइकल की स्पेशल हैडलाइट जलाई, और रेगिस्तान की धरती पर एक दूसरा सूरज जल उठा।
दोनों आतंकवादियों की आंखें चुंधिया गई। कुछ पलों के लिए उनको दिखाई देना बंद हो गया।
और इन कुछ क्षणों में ही सारा खेल खत्म हो गया। कमज़ोर ध्रुव के घूंसे भी दोनों आतंकवादियों के लिए बहुत थे—
ठिशूं
ताड़
ध्रुव एक बार फिर शहर की तरफ बढ़ चला। लेकिन इस बार वह अकेला नहीं था—
उसके साथ दो सवारियां और भी थीं।

लेकिन शहर में घुसते ही ध्रुव का दिमाग चकरा गया–
क्योंकि इस वक्त शहर में और रेगिस्तान में जरा सा ही फर्क था।
चारों तरफ की गई भयानक तोड़ फोड़ इस बात की गवाही दे रही थी कि अभी-अभी यहां से कोई भीषण तूफान गुजरा है–
यह सब कैसे हुआ, भाई?
ध्रुव साहब, मैं सच बताऊंगा तो आप कहेंगे कि मैं ड्यूटी पर पिए हुए हूं। ये... ये (गड़ब) सारी तोड़-फोड़ एक बूढ़े ने की है।...
...जो देखने में तो ऐसा लगता था जैसे एक झापड़ में मर जाएगा।
लेकिन जब मैंने उसे रोकने की कोशिश की, तो उसने मुझे एक झापड़ मारा। ... उसके बाद मुझे अभी-अभी होश आया है।
वह अपने एक झापड़ से शायद शेर को भी मार सकता है, कांस्टेबिल! इसीलिए शर्म मत करो, और मुझे यह बताओ कि वह बूढ़ा गया किधर है?
वह शक्तिनगर की तरफ गया है, ध्रुव साहब!
तो तुम इन आतंकवादियों को संभालो।
...मैं उसे देखता हूं।
आतंकवादी! और वह भी दो-दो!!
हमारे ध्रुव साहब भी बस कमाल हैं।

दूसरी तरफ- बूढ़ा रूह परेशान था-
इतनी तबाही देख कर तो वह लड़का ध्रुव, मुझे खत्म करने का, कोई न कोई रास्ता अवश्य निकाललेगा।
लेकिन वह अब तक आया क्यों नहीं? कहीं वह मर...?
नहीं, नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।
शायद उसको यहां तक बुलाने के लिए इतनी तबाही काफी नहीं...
आह!
तुम आ गए।
प्रार्थना करने आया हूं कि आप यह विनाश
...और हमारे साथ बैठकर शांति से विचार-विमर्श करें। इस तरह से आपकी समस्या का कोई न कोई हल अवश्य निकल आएगा।
तभी- पूरा वातावरण टैंकों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा-
ध्रुव, हमने इस शैतान को खत्म करने के लिए सेना से मदद मांगी है।
तुम बीच में से हट जाओ।
अच्छा! तो अब तुम लोग मुझपर तोप चलाओगे?
नहीं, सर! इसको खत्म करना इस समस्या का हल नहीं है।...
हट जाओ, ध्रुव! वर्ना ये मरा तो कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे। लेकिन तुमको जरूर मार डालेंगे।...
... और तुम्हारे साथ ही मेरे मरने की उम्मीद भी खत्म हो जाएगी।
फायर!
कड़ाम
टैंकों से दो शक्तिशाली गोले बूढ़े के सीने पर आकर फटे।

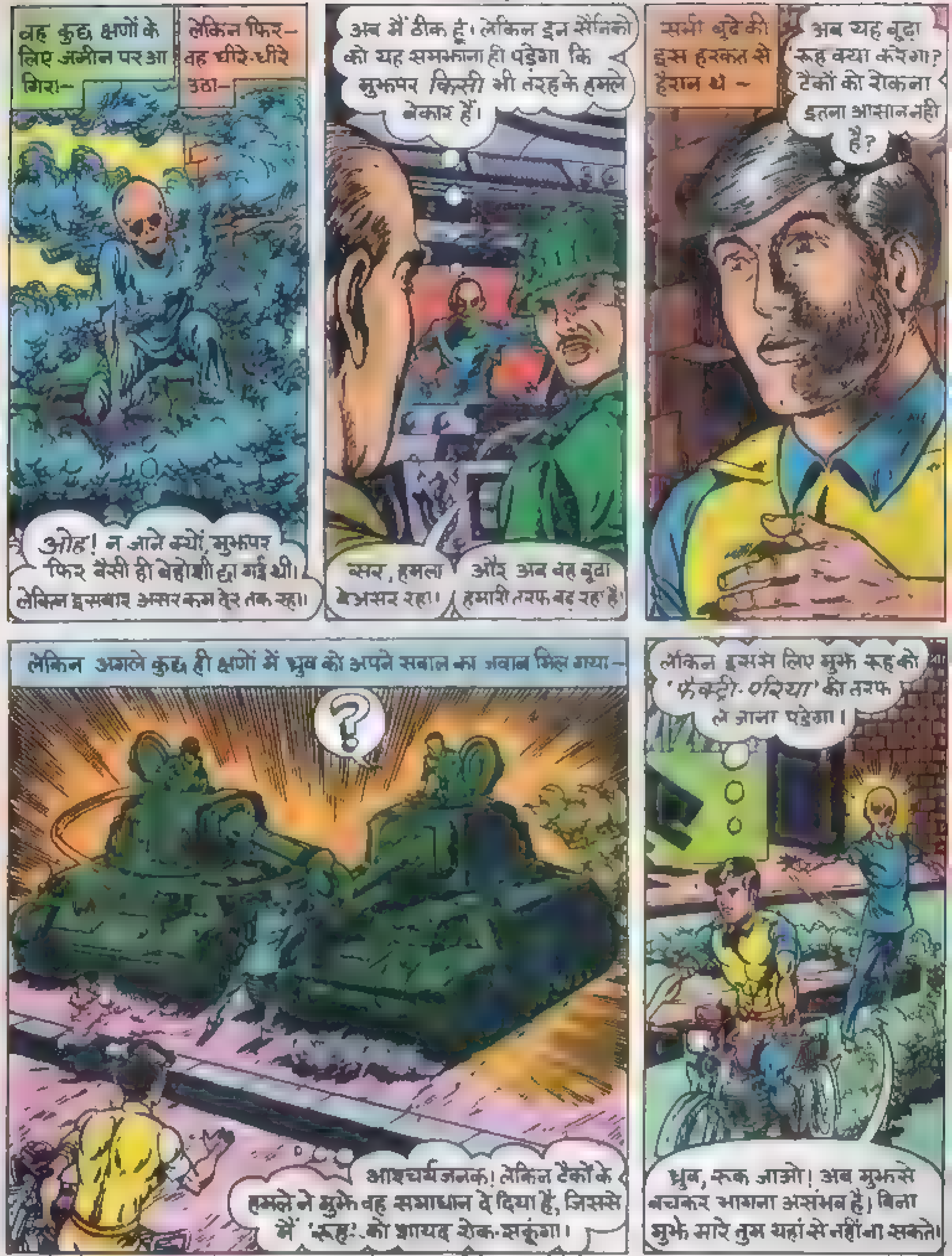
वह कुछ क्षणों के लिए जमीन पर आ गिरा–
लेकिन फिर– वह धीरे-धीरे उठा–
ओह! न जाने क्यों, मुझपर फिर वैसी ही बेहोशी छा गई थी। लेकिन इसबार असर कम देर तक रहा।
अब मैं ठीक हूं। लेकिन इन सैनिकों को यह समझाना ही पड़ेगा कि मुझपर किसी भी तरह के हमले बेकार हैं।
सर, हमला बेअसर रहा।
और अब वह बूढ़ा हमारी तरफ बढ़ रहा है।
सभी बूढ़े की इस हरकत से हैरान थे–
अब यह बूढ़ा रूह क्या करेगा? टैंकों को रोकना इतना आसान नहीं है?
लेकिन अगले कुछ ही क्षणों में ध्रुव को अपने सवाल का जवाब मिल गया–
?
आश्चर्यजनक! लेकिन टैंकों के हमले ने मुझे वह समाधान दे दिया है, जिससे मैं 'रूह' को शायद रोक सकूंगा।
लेकिन इसके लिए मुझे रूह को 'फैक्ट्री-एरिया' की तरफ ले जाना पड़ेगा।
ध्रुव, रुक जाओ! अब मुझसे बचकर भागना असंभव है। बिना मुझे मारे तुम यहां से नहीं जा सकते।

मैं तुम्हारा पीछा दुनिया के अंत तक नहीं छोड़ूंगा। और इस बार तुमको खत्म करके ही दम लूंगा।
ठीक है, रूह! क्योंकि अगर तुमने मेरा पीछा छोड़ दिया तो मेरी योजना चौपट हो जाएगी।
दूसरी तरफ - आतंकवादी अपने ट्रांसमीटर पर पूरा घटनाक्रम सुन रहे थे -
ये ध्रुव यहां कैसे पहुंच गया?
इसका मतलब है कि अज्जा और हीरा अपने काम में असफल रहे।
अब तो इस काम के लिए मुझे खुद ही जाना होगा। तुम सब लोग अपने-अपने हथियार लेकर तैयार हो जाओ।
इस बार ये मौका हमारे हाथ से नहीं निकलना चाहिए।
उधर ध्रुव बूढ़े को खींचता हुआ शहर से बाहर ले आया था -
अपने प्लान के मुताबिक मैं इसको (खौं खौं) फैक्ट्री एरिया तक तो खींच लाया।
अब देखना यह है कि मेरा प्लान काम करता है या नहीं? (खौं खौं)
ओफ! यहां पर कैसी अजीब-अजीब सी गंध आ रही है।
उधर- ध्रुव के पीछे दौड़ता बूढ़ा अचानक रुक गया-
ओह! मुझपर फिर से बेहोशी छा रही है।
ये महक कैसी है? लगता है कि मुझे इसी महक के कारण बेहोशी आ रही है।
मैं इस गंदी बू की जड़ को खत्म कर दूंगा। और वह जड़ ये इमारत है, जहां से यह बू आ रही है।
भागो! यह तो वही बूढ़ा है, जिसके बारे में रेडियो से 'विशेष सूचना' आ रही है।
घबरा मत। न्यूज में साफ कहा गया है कि इसने अब तक किसी की जान नहीं ली है।

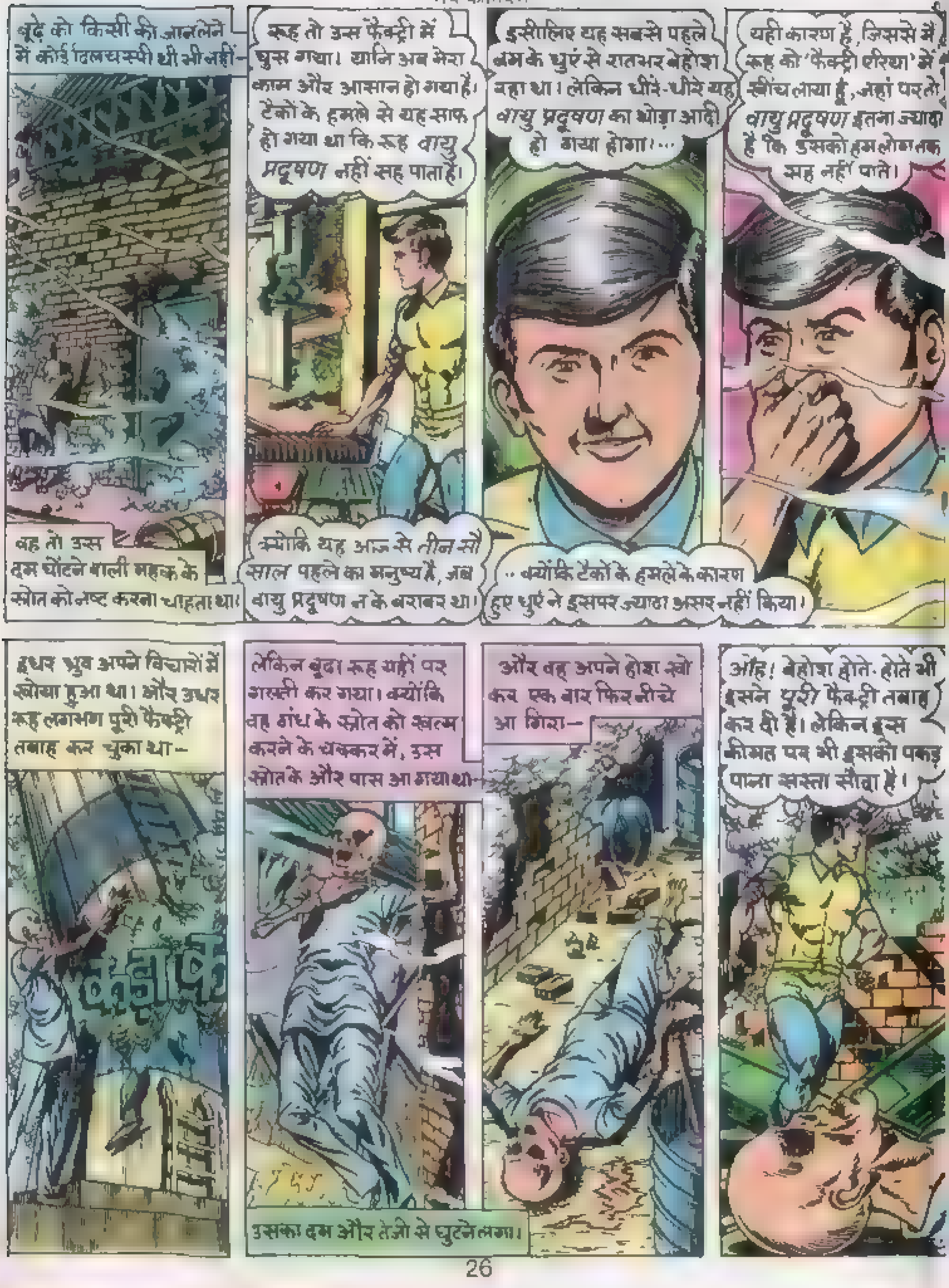
बूढ़े को किसी की जान लेने में कोई दिलचस्पी थी भी नहीं—
वह तो उस दम घोंटने वाली महक के स्रोत को नष्ट करना चाहता था।
रूह तो उस फैक्ट्री में घुस गया। यानि अब मेरा काम और आसान हो गया है। टैंकों के हमले से यह साफ हो गया था कि रूह वायु प्रदूषण नहीं सह पाता है।
क्योंकि यह आज से तीन सौ साल पहले का मनुष्य है, जब वायु प्रदूषण न के बराबर था।
इसीलिए यह सबसे पहले बम के धुएं से रातभर बेहोश रहा था। लेकिन धीरे-धीरे यह वायु प्रदूषण का थोड़ा आदी हो गया होगा।...
..क्योंकि टैंकों के हमले के कारण हुए धुएं ने इसपर ज्यादा असर नहीं किया।
यही कारण है, जिससे मैं रूह को 'फैक्ट्री एरिया' में खींच लाया हूं, जहां पर तो वायु प्रदूषण इतना ज्यादा है कि इसको हम लोग तक सह नहीं पाते।
इधर ध्रुव अपने विचारों में खोया हुआ था। और उधर रूह लगभग पूरी फैक्ट्री तबाह कर चुका था—
कड़ाक
लेकिन बूढ़ा रूह यहीं पर गलती कर गया। क्योंकि वह गंध के स्रोत को खत्म करने के चक्कर में, उस स्रोत के और पास आ गया था—
उसका दम और तेजी से घुटने लगा।
और वह अपने होश खो कर एक बार फिर नीचे आ गिरा—
ओह! बेहोश होते-होते भी इसने पूरी फैक्ट्री तबाह कर दी है। लेकिन इस कीमत पर भी इसको पकड़ पाना सस्ता सौदा है।

तभी – जलती हुई फैक्ट्री के टूटे गेट से एक गाड़ी अंदर दाखिल हुई –
वह रहा। ट्रांसमीटर के सिग्नलों ने हमको बिल्कुल सही जगह पर पहुंचा दिया। अब हम इससे जग्गा और हीरा की गिरफ्तारी का बदला लेंगे।
जग्गा और हीरा! ये तो शायद उन आतंकवादियों के नाम हैं।
यानि ये सब उनके ही साथी हैं।
गोली मार दूं, सुप्रीमो?
नहीं! यह छोकरा इतनी आसान मौत के काबिल नहीं है। सबसे पहले इसको जग्गा और हीरा की कीमत चुकानी है।...
...और वह कीमत इससे मेरे घूंसे वसूल करेंगे।...
...लेकिन इस बीच अगर यह मुझपर पलट कर वार करे तो इसपर बेझिझक गोली चला देना।...
...और जब तक यह मेरे हाथों से अपनी हड्डियां तुड़वाता रहे, तब तक खामोशी से तमाशा देखना।
धा ड़
आह! यह तो पक्का है कि मेरे पलटकर वार करते ही मुझ पर तनी बंदूकें मेरे शरीर को छलनी कर देंगी।
धड़ड़ड़प

इसीलिए मौका मिलने तक मार खाने के अलावा और कोई चारा नहीं है।
ध्रुव जमीन पर आ गिरा। उसका बदन कांच के टूटे टुकड़ों पर आ गिरा।
और ध्रुव ने इस मौके का भरपूर फायदा उठाया। उसने देखते ही देखते पैंतरा बदला–
?
और सुप्रीमो का शरीर एक मजबूत शिकंजे में कस गया। उसकी गर्दन पर एक टूटे कांच का धारदार टुकड़ा आ लगा–
अपने आदमियों से कहो कि वे पांच सेकंड के अंदर अपने हथियार पानी की टंकी में फेंक दें। वर्ना…
आऽऽ! फेंक दो। फेंक दो।
एक के बाद एक कई छपाके हुए। और भारी-भारी हथियार पानी के तल में बैठने लगे–
छपाक छपाक
शाबास! अब तुम सब अपनी जीप में चलकर बैठो। और पुलिस के आने तक अच्छे बच्चों की तरह चुपचाप इंतजार…
लेकिन फैक्ट्री की ध्वस्त हो चुकी इमारत से…
…मलबा अब भी गिर रहा था -
आह!

अब तक कमजोरी लगने के बावजूद ध्रुव जोश में काम कर रहा था। लेकिन इस भयंकर चोट को वह सह नहीं पाया-
हाहा! किस्मत हमारे साथ है, डिप्टी!
अब इसको भून डालो!
लेकिन, सुप्रीमो, सारी बंदूकें तो हमने पानी की टंकी में फेंक दी हैं।
कोई बात नहीं! कोई बात नहीं! आदमी को मारने के पचास तरीके होते हैं।
इस लौंडे को खंभे से बांध दो।
और साधू! तू जाकर गाड़ी से पेट्रोल का कनस्तर निकाल ला।
देखते ही देखते सारा इंतजाम हो गया-
अब सिर्फ एक चिंगारी की देर थी-
और ध्रुव के चारों तरफ से भयंकर लपटें भभक उठीं-
लेकिन अब तक फैक्ट्री का प्लांट जल चुका था, और रसायनों की वह महक जिसने बूढ़े रूह को बेहोशी की कैद में जकड़ रखा था, खत्म हो गई थी-
अब रूह को होश आ रहा था।

आंखें खुलते ही उसकी नजर जिस दृश्य पर पड़ी, उसने रूह को क्रोधित कर दिया--
ये डाकू ध्रुव को जला देना चाहते हैं।
उस लड़के को, जिसको मैंने हर संभव तरीके से परेशान किया, लेकिन फिर भी इसने मेरी ही आन बचानी चाही।
इस बुरे काम के लिए इन डाकुओं को दोजख की आग में जलना पड़ेगा।
सुप्रीमो!
लेकिन इससे पहले कि खुशी में डूबे आतंकवादी कुछ समझ पाते-
प च च
फ चा क
रूह का प्रचंड गुस्सा उनपर कहर बन कर टूट पड़ा-
धड़ाक
भाड़

लेकिन आखिरी आतंकवादी की किस्मत तेज थी –
आह!
आऽऽऽ!
क्योंकि तभी ध्रुव की एक तेज कराह ने रूह का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।
वह तेजी से ध्रुव की तरफ लपका–
ओह! मुझे इस लड़के की जान बचा कर इसके एहसानों का बोझ उतारना ही पड़ेगा।
अब तक ध्रुव के बूट सुलगने की गंध वातावरण में फैलने लगी थी।
लेकिन रूह के एक शक्तिशाली झटके से ही रस्सी के टुकड़े-टुकड़े हो गए–
चटक
पलक झपकते ही रूह, ध्रुव को आग से बाहर निकाल कर सुरक्षित स्थान पर ले आया–
ध्रुव! ध्रुव!! होश में आओ।
ध्रुव ने धीरे-धीरे आंखें खोलीं।
और–
रूह, य... यह तुमको क्या हो रहा है? तुम्हारे चेहरे पर से खाल गायब हो रही है!!
हां, ध्रुव! आज मैंने तीन सौ सालों में, पहली बार, अपना स्वार्थ भूल कर किसी की जान बचाकर सच्ची इंसानियत का काम किया है।
फकीर के शाप के मुताबिक अब मुझे जिंदगी से छुटकारा मिलेगा।

ध्रुव की विस्मित
सामने ही –
रूह का शरीर धीरे-धीरे मिट्टी में मिल गया–
जीप रोको, रामसिंह!
वह रहा ध्रु लेकिन वह बू कहीं दिखाई दे रहा है।
वह बूढ़ा कहां गया, ध्रुव?
हमको उसे हर कीमत पर पकड़ कर कानून के हवाले करना है।
अब उसको कोई नहीं पकड़ सकता, सर!
वह जहां से आया था, वहीं पर वापिस चला गया है।
अब हमारा शहर सुरक्षित है।
क्यों, ध्रुव
आंखों स दो आंसू टपक प